[illegible]

[illegible]

[illegible]

चतुर्थ अध्याय

" काका हाथरसी के काव्य में चित्रित विभिन्न समस्याओं का मूल्यांकन "

मनुष्य का जीवन विभिन्न समस्याओं से घिरा है। इन समस्याओं से जूझता हुआ आदमी इन समस्याओं में उलझकर रह गया है। मनुष्य चाहता है कि, इन समस्याओं का समाधान वह प्राप्त कर लें। लेकिन यह इतना आसान भी नहीं है। इसलिये इन समस्याओं से कुछ देर के लिए राहत पाने के लिए मनुष्य नाटक, सिनेमा देखता है, किताबे पढ़ता है और कविताएँ तो प्राचीन काल से मनुष्य को बहलाती आयी है। इनमें आधुनिक काल से प्रचलित हास्य-व्यंग्य कविताएँ बड़ा महत्त्व रखती है। हास्य-व्यंग्य कवियों का मूल उद्देश्य न केवल मनुष्य के मन को बहलाना रहा है बल्कि विभिन्न समस्याओं को हास्य-व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत कर उनके प्रति हमारे मन में जागृति पैदा करना रहा है।

डा. मिथिलेश माहेश्वरी ने कहा है - " व्यंग्यकार समाज का एक ऐसा सफाई-कर्मी है, जो अपने व्यंग्य द्वारा समाज का कूड़ा-कचरा बाहर करता है और समाज को स्वच्छ बनाता है। अगर व्यंग्यकार सामाजिक दोषों और विसंगतियों को व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति न करें तो उनकी ओर किसी का भी ध्यान नहीं जाएगा और विसंगतियाँ लगातार पनपती रहेंगी। सारा समाज विश्रृंखलित हो जाएगा।" [1] इस हास्य-व्यंग्य के पीछे सामाजिक हित की भावना है। मानवीय कल्याण के उद्देश्य से लिखा गया यह हास्य और व्यंग्य समाज जीवन के कटु सत्य को हलके-फुलके ढंग से सामने रखता है।

---

१. डा. मिथिलेश माहेश्वरी - "काका हाथरसी : एक समीक्षा यात्रा" [पृष्ठ २८]।

समाज में आज कई प्रकार की समस्याएँ है जिनसे मनुष्य उब जाता है। ऐसी समस्याओं को एक अलग रूप में पेश कर लोगों के लोगों के दिलपर पड़ गहरे तनाव को हास्य-व्यंग्य कवि दूर करने का प्रयास करते है। उन समस्याओं को और देखने का लोगों का नजरिया बदल देने की कोशिश वे करते हैं। उन समस्याओं को हास्य-व्यंग्य का कवि सुलझा तो नहीं सकता परंतु वह हमें उसके प्रति गहराई से सोचने के लिए मजबूर कर देता है।

समाज की समस्याओं के प्रति खुद गहराई से सोचकर हास्य-व्यंग्य कविताओं के द्वारा हलके-फुलके ढंग से हमारे सामने प्रस्तुत करनेवाले ऐसे ही कवि काका हाथरसी है। उनकी कविताओं को पढ़कर सुनकर हम हँस भी देते है, उसमें छुपा व्यंग्य का तीर हमें घायल भी करता है और हम सोचने पर मजबूर भी हो जाते है।

काकाजी ने वैसे तो समाज में प्रचलित कई समस्याओं पर अपनी कलम को चलाया है। उनके काव्य में चित्रित समस्याओं को हम निम्नलिखित विभागों में विभाजित कर सकते है -

१] धार्मिक समस्या।

२] राजनीतिक समस्या।

3] आर्थिक समस्या।

४] सामाजिक समस्या।

इन सभी समस्याओं को अलग-अलग रूप में विश्लेषित किया जाए तभी हम उनके काव्य के गहरे मर्मघातक व्यंग्य और गुदगुदी पैदा करने वाले हास्य को समझ पायेंगे।

१] धार्मिक समस्या -

आधुनिक काल में धर्म एक आडम्बर मात्र बनकर रह गया है। सच्चे भक्तों, सच्चे साधकों की आज कमी दिखाई देती है। हर कोई बगुला भगत बनकर रह गया है। भक्तों के अलग-अलग रूप और उनकी भक्ति के भी अलग-अलग रूप देखने को मिलते है। ढोंगी भक्तों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है। आधुनिक कालीन भक्तों की भक्ति में स्वार्थ भावना अधिक दिखाई दे रही है। आजकल धर्म के नामपर जो आडम्बर मचाया जाता है, उसके प्रति भी काकाजी सजग दिखाई देते है। उन्होंने धर्म को, भक्तों को और उनकी ढोंगी भक्ति को, त्यौहारों को और लोकगीतों के आधुनिक रूपों को अपनी विभिन्न कविताओं में बध्द किया है। उन्हें हम निम्नलिखित भागों में विभाजित कर सकते है।

धर्मनिरपेक्षता -

आजकल कहा जाता है कि, भारत धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। किसी भी धर्म को अत्यधिक महत्त्व हमारे देश में नहीं दिया जा सकता। लेकिन वास्तविकता कुछ अलग ही है। हमारे देश में धर्मनिरपेक्षता का रूप आज क्या है यह बताते हुए " धर्मनिरपेक्षता " कविता में काकाजी ने लिखा है -

" संविधान का सम्मान करते हुए
हमने धर्मनिरपेक्षता का पेटा भर दिया है।
बच्चों की पहली पुस्तक से
" ग " माने गणेश हटाकर
" ग " माने गधा कर दिया है। " [१]

---

१. सं. डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - "पैरोडियाँ व कविताएँ"
[पृष्ठ ९७]।

धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र की दुहाई देनेवाले स्वार्थी लोग इसी की आड़ में अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। इसी को मोहरा बनाकर नेता लोग अपने " वोट " कमाने लगे हैं।

आधुनिक भक्त और उनकी भक्ति -

आजकल लोगों की ढ़ोंगी और स्वार्थयुक्त भक्ति यह भी एक समस्या बन गयी है। धर्म के नामपर जो भक्त भगवान से कुछ पाने की तमन्ना रखते हुए भक्ति करते हैं उनपर काकाजी ने खूब छिंटाकसी की है। आधुनिक भक्तों के रूप को दिखाते हुए काकाजी ने " सत्संग " कविता में लिखा है -

" हाथ में हो गोमुखी, माला सदा फिरती रहे,
नम्र ऊपर से बनो, भीतर छुरी चलती रहे।" [१]

कुछ इसी प्रकार का भाव काकाजी ने " काका दोहावली " संग्रह के " ढ़ोंगी संत " में प्रस्तुत किया है।

माला जपकर भक्ती करनेवाले साधकों की कबीरदास जी ने निंदा की है लेकिन काकाजी " धार्मिक शिकारी " में उनसे कहते हैं -

" पाप-पुण्य से आँखें मींचो,
माया से काया को सींचो।
हरे - हरे की माला जपकर,
हरे - हरे नोटों को खींचो।" [२]

आधुनिक काल के भक्त अपने आप को भगवान का दास तो मानते हैं लेकिन भक्तिकाल की दास्यभावना से परे आधुनिक काल के इन भक्तों की दास्य भावना में स्वार्थ छिपा रहता है। " झूठ का घूँट " में

---

१. काका हाथरसी - " काका के कारतूस " [पृष्ठ ४३]।
२. सं. डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - "काकदूत व अन्य कविताएँ " [पृष्ठ १५६]।

काकाजी ने ऐसे भक्तों का पर्दाफाश किया है ---

" कर्म सब भागवत अर्पण कर
बना रहता हूँ मैं निष्काम
न रखाता अपने पास छदाम
न मेरा दोष न मेरा खोट
तिजोरी में रहते हैं नोट
कि, जिसके स्वामी हैं भगवान
मैं उनका रजिस्टर्ड हूँ दास
इसलिए चाबी मेरे पास। "[1]

स्वार्थ में अंधे हुए इन भक्तों की भगवान से प्रार्थना भी कितनी स्वार्थ-युक्त है। "कलियुगी भक्त" में ऐसे भक्तों की प्रार्थना का वर्णन काकाजी ने किया है -

" प्रभु, मोरे अवगुन चित्त न धारो।
सौ बोरा सीमेंट मँगायो, फिफ्टी-फिफ्टी रेत मिलायो
यों उत्पादन दुगुनो करके, बेच दियो सबरो।
प्रभु मोरे ------।"[2]

ऐसे भक्तों के बारे में काकाजी कहते हैं कि, इनको आत्मापर स्वार्थ का परदा पड़ा है। इसलिए वे भगवान को पहचान नहीं पाते। काकाजी ने ऐसे भक्तों को बताया है कि, वे भाग्य के भरोसे बैठे न रहे और कर्म का अख्तियार हाथ में ले लें। लेकिन ऐसे पैसों के पुजारी भक्त तो खुद ही भगवान को लालच दिखाते है -

" एक लाख की लाटरी,
दे भगवान निकाल,
सवा रुपे का भोग हम, लगवा दें तत्काल।"[3]

---

१. सं. डा. गिरिराजशरण अग्रवाल- "पैरोडियाँ व कविताएँ" [पृष्ठ ८२]।
२. काका हाथरसी - "काका के कारतूस" [पृष्ठ २३]।
३. काका हाथरसी - "लूटनीति मंथन करो" [पृष्ठ २६]।

साथ ही खुद के रिश्वत खाने पर यही तर्क इस्तमाल करते है कि, आज कल लाखों का काम करने के लिए सिर्फ दस रुपये का भोग भगवान को दे दिया तो भी काम बन जाता है। इस प्रकार यदि भगवान खुद ही रिश्वत ले रहा है तो अन्य लोग क्यों न लें ? ये पैसों के पुजारी भक्त न जाने क्या - क्या कर बैठेंगे ? वे लक्ष्मी माता को प्राप्ति के लिए उसकी प्रार्थना कर उसे प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं। " अर्थकामना " कविता में काकाजी लिखते है -

" लक्ष्मी मैया ! भाग्य के, खोलो शीघ्र किवाड़,
नोटों की कुछ गड्डियाँ, भेजो छप्पर फाड़।
भेजों छप्पर फाड़, मूर्ख रसगुल्ले खाते,
ज्ञानी-ध्यानी प्राणी, देखो चने - चबाते।
कहँ "काका" चरणामृत, पीऊँ भर-भर चुल्लू,
पुनर्जन्म में देवी। मुझे बनाना उल्लू।" [1]

पैसों को प्राप्ती के लिए लोग उल्लू बनने को भी तैयार है जो कि, लक्ष्मी जी का वाहन माना जाता है।

" पर उपदेश कुशल " कविता में काकाजी ने ऐसे भक्तों का जिक्र किया है जो नियम से कीर्तन, प्रवचन सुनने के लिए जाते है। परंतु क्या उनका मूल उद्देश्य वही होता है ?

" प्रेम से सत्संग, प्रवचन, कीर्तन में जाइए,
भीड़ करके खूबसूरत, चप्पले ले आइए
बात हँसने की नहीं, यह कल्पना कोरी नहीं,
सब प्रभु की वस्तु जग में इसलिए चोरी नहीं।" [2]

---

१. काका हाथरसी - "फक्के के छक्के" [पृष्ठ १५]।
२. काका हाथरसी - " मेरा जीवन ए - वन " [पृष्ठ १३६]।

इसी प्रकार जो लोग एकादशी का व्रत रखते हैं, उनके उपर भी काकाजी ने "जीवन दर्शन" कविता में तीखा व्यंग्य किया है। वे कहते हैं कि, ऐसे लोग व्रत तो कर लेते है परंतु उसी दिन अधिक खा लेते हैं। और अधिक खाने का कारण भी उनके पास मौजूद है --

" जिस दिन एकादशी होती है, उस दिन और अधिक खाता हूँ,
क्योंकि, ब्रह्म है घट के घट में, उसे तुष्ट करना ही होगा,
यह काया प्रभुका मंदिर है, उसे पुष्ट करना ही होगा।"[1]

यह है आज कल के भक्तों की स्थिति। वे अपने सारे पाप धुल जाने के लिए गंगा में उसको धो देते है। काकाजी ने गंगा मैया से पूछा कि, --

" इतने सारे प्रदूषणों का क्या करती है ?
गंगाजी ने कहा, अगर मैं रख लूँ इनको,
खोल तीसरा नेत्र, भस्म कर दें शिव मुझको।
इसलिए मैं ऐसी रिस्क नहीं लेता हूँ
सागर की गागर में सब उंडेल देता हूँ।"[2]

आधुनिक काल में भगवान के नाम का गलत इस्तेमाल किस तरह किया जाता है और उसके नाम को लेकर भ्रष्टाचार किया जाता है इसपर काकाजी ने "नंबर दो की माया" में तीखा व्यंग्य किया है --

" व्यर्थ के शब्दाडम्बर पर मारकर लात,
"रामकृष्ण" के माध्यम से ही करते है बात।
सफेद धन का इशारा है " राम"
काले धन का कोडवर्ड है " कृष्ण"।
जिसने कह दिया " राधेश्याम",
समझ लो हो गया उसका काम।
निःसृत हुआ यदि मुख से " हे राम"
नहीं मिलेंगे दाम, मारे गये गुलफाम।"[3]

---

१. काका हाथरसी - " मेरा जीवन ए-वन" [पृष्ठ १३७]।
२. काका हाथरसी - " काका की महफिल" [पृष्ठ १४८-१४९]।
3. सं.डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - "पैरोडियाँ व कविताएँ।[पृष्ठ ९९]।

– भक्ति के पुराने रूपों में आधुनिकता –

अपनी भक्ति को व्यक्त करने के लिए भक्त पद, कीर्तन, चौपाई, वंदनाएँ, आरतीयाँ आदि का प्रयोग करते है। काकाजी ने तो उसमें भी आधुनिकता भर दी है।

पद – प्रस्तुत पद सूरदास द्वारा लिखित "मैया मैं नहिं माखन खायों" पद का पैरोड़ी है, इसमें आज समाज में जो भ्रष्टाचार और हर वस्तु में कुछ-न-कुछ मिलावट हो रही है, कोई भी वस्तु शुध्द नहीं मिलती, इसी तथ्य को चित्रित किया है। –

" मैया मोरो मैं नहिं माखान खायों।
माखन में घुसि रहयौं डालडा, टैस्ट करावन धायौ।
हेरो वारो पीति भाजौ, झापड़ मार भिगायो। मैया ...
इंसपेक्टर की पाकिट भरि, के उलटो मोहि फँसायो,
बाँह पकड़ ले गए सिपहिया, बंदी गृहभिजवायो। मैया . . .[1]

कितना यथार्थ चित्रण इस पद के द्वारा काकाजी ने किया है। इसमें उन्होंने रिश्वत समस्यापर भी अपना तीर चलाया है।

कीर्तन – काकाजी ने " स्वराज कीर्तन" में रिश्वत की समस्या को ही सामने रखा है --

" रिश्वत रूपी पेड़ कूं, जोर – जोर झकझोर
आंधी के ये आम है, दोनों हाथ बटोर
घी बताइ कर बेच नर, मूँगफली कौ तेल
फिर सरसों के संग में, सत्यानासी पेल
इंसपेक्टर कू दै दै दाम, वाके मुँह तै लग्यौ हराम
रघुपति राघव राजाराम, माल पचाओ सीताराम।"[2]

---

१. काका हाथरसी – " काका काकी की नोंक-झोंक" [पृष्ठ ७१]।
२. काका हाथरसी – " काका के व्यंग्यबाण" [पृष्ठ १३७-१३८]।

चौपाई - काकाजी ने बिल्ली के गुणों का वर्णन एक " चौपाई " में करते हुए लिखा है --

" जय बिड़ाल ध्याऊँ गुण-सागर। जय कमाल घर द्वार उजागर ॥ १॥
कुदिन दूत अतुलित बलशाली। तुम्हें देख रोवै घरवाली ॥ २॥" १

वंदना - काकाजी ने खाद्मंत्री जी की वंदना है, लक्ष्मीवाहन उल्लू की वंदना की है। "लाऊड् स्पीकर" वंदना लिखकर उसे भी महत्ता प्रदान की है।

" लाऊड स्पीकर प्रभो ! कोलाहल के बाप,
भोंपू या कनफोड़वा, नाद ब्रह्म है आप।
नाद ब्रह्म है आप, घनघोर दहाड़े,
बहरे सुनने लगे, दाँत गूँगा जी फाड़े। "२

भगवान की आरती तो हम सब ही करते है परंतु काकाजी ने तो उल्लू की[3], कुर्सी मैया की[4], चीनी चाची की[5], दलबदलू जी की[6], वित्तमंत्रीजी की[7], आरती की है। यहाँतक कि, " आपाती आरती " में इंदिरा गांधीजी की आरती की है ---

" जय इंदिरा मैया, ओऽम् जय इंदिया मैया।
प्रजातंत्र की नाविक हो तुम, पार करो नैया।
ओऽम ...... "८

इसी के साथ ही काकाजी ने " विनय पत्रिका " लिखते हुए काकी के साथ उनका किस तरह झगड़ा हुआ और काकी को मनवाने के लिए उन्हें कितनी अनुनय-विनय करनी पड़ी इसका वर्णन किया है। " नवधा भक्ति " के आधुनिक रूपों को भी काकाजी ने प्रस्तुत किया है।

---

१. सं. डा. गिरिराजशरण अग्रवाल- "काकदूत व अन्य रचनाएँ [पृष्ठ २०६]
२. काका हाथरसी - " जय बोलो बेईमान की " [पृष्ठ ५१]
३. सं. डा गिरिराजशरण अग्रवाल -"काकदूत व अन्य कविताएँ [पृष्ठ ८५]
४. वही [पृष्ठ ८६]। ५] वही [पृष्ठ ८८]।
६. वही [पृष्ठ ९०]। ७. वही [पृष्ठ ९२]।
८. काका हाथरसी - " मेरा जीवन ए-वन " [पृष्ठ १५८]।

- होली गीत -

" होली " में भगवान कृष्ण के महत्त्व को जानते हुए एक "कर" चोर उसे अपने समान कैसे बता रहा है यह देखें --

" कैसो होरी मचाई श्याम, मोहि चोरी लगाई।
तुम माखन के चोर साँवरे, मैं "कर" चोरी भाई।।
खोट कहा मेरे मनमोहन ? सोहा आपसों पाई।
नई कोठी बनवाई।। कैसो होरी ...... "[1]

इस प्रकार काकाजी ने आधुनिक भक्तों को कई रूपों की, भक्ति को दिखाते हुए धार्मिक समस्या किस तरह विकृत रूप ले रही है और ढोंगी साधकों में किस तरह वृध्दि हो रही है यह दिखाया है। धर्म के नाम पर बढ़ रहे इन आडम्बरों ने धर्म की नींव को खोखला कर दिया है और इस क्षेत्र में भी भ्रष्टाचार फैल रहा है।

धर्म के क्षेत्र में भी बढ़ते हुए इस अनाचार की रोकथाम करने के लिए सभी को एक साथ आगे बढ़ने की आवश्यकता है वर्ना गंगा मैया से सागर तक, सागर से बादलों तक और वहाँ से फिर वर्षा के रूप में उसी धरती पर गिर पड़नेवाले इस बुराई को हम रोक नहीं पायेंगे, इसी बात को अत्यंत सीधे - सादे ढंग से काकाजी ने समझाया है।

२] <u>राजनीतिक समस्या -</u>

आजकल के राजनेता जो आश्वासन देते हैं उसे पूरी तरह से निभा नहीं पाते हैं, उनके दर्शन केवल चुनाव के समय ही हो जाते हैं, यही वजह है कि, वे हास्य-व्यंग्य साहित्यकार के तीर का लक्ष्य बन जाते है। चुनावों में पानी की तरह जो पैसा बहाया जाता है, उसे सत्ता के दुरूपयोग से

---

१. काका हाथरसी - " काका के कारतूस" [पृष्ठ १३०]

हासिल किया जाता है। इसी वजह से समाज में भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। चुनावों में जातिवाद को बढ़ावा दिया जाता है सिर्फ चन्द वोटों के लिए। इनकी अवसरवादी वृत्ति, दलबदलू वृत्ति, चापलूसी, स्वार्थ साधने की वृत्ति आदि सभी की वजह से यह वर्ग आम लोगों के दिलों-दिमाग में अपने लिए कोई जगह नहीं बना पाता। उन्हें एक अलग नजरिए से देखा जाता है। इन्हीं के वजह से समाज में हड़ताल, घेराव, आगजनी, लूटपाट पथराव आदि घटनाएँ होती है क्योंकि, समाज में "फूट" डालकर उनके " वोट" प्राप्त करना यही उनका उद्देश्य रहता है।

काकाजी ने इसी समस्या को लकर राजनेताओं के रूप, नेताओं का भ्रष्टाचार, चुनाव, नेताओं की दलबदलू वृत्ति, अनशन, रिश्वत, कुर्सी के पीछे भाग-दौड़ आदि कई विषयोंपर अपनी कविताएँ लिखी हैं। इन कविताओं को इन विषयों के अनुसार विभाजित कर निम्नलिखित रूप में विश्लेषित किया जा सकता है -

- नेता -

आज कल नेता को समाज में किस नजरिये से देखा जाता है, यह बताते हुए काकाजीने बताया है की, आज कल किसी को " नेता " कहना भी " गाली " के बराबर माना जाता है। काकाजी बस में जा रहे थे। बहुत देर खड़े रहने पर उन्हें बैठने के लिए एक जगह मिल गई। लेकिन उसपर एक लड़का बैठ गया। काकाजी ने उसे उठने के लिए कहा तो उसने बदतमिजी की।

" इस हरकत से चिढ़कर हमने व्यंग्यबाण छोड़ा -
ओह, यू नेता महान!
सुनकर यह राजनैतिक गाली,
लड़के की आँखों में आ गई लाली।
खड़ा होकर बोला मुक्का तान -
" यू दलबदलू, यू चमचा, यू झूठोस्तान।" [9]

इस " राजनैतिक गाली " कविता में काकाजी ने जो व्यंग्य किया है वह कितना समर्पक है। आजादी को इतने साल हो गये परंतु ये नेता लोग अभी तक देश से संप्रदाय संघर्ष नहीं मिटा पाये। काकाजी " नेता-अभिनेता " में कहते है, इनसे तो सर्कस के अभिनेता अच्छे होते है। वे कुछ ही दिनों में शेर और बकरियों में मेल-मिलाप करा देते है। सूखे और अकाल में हरे रंग की ऐनक लगाकर हरियाली देखने की सलाह देनेवाले ये नेता मद्यनिषेध का भाषण देने के लिए भी स्वयं शराब पीकर भाषण देते है। इसलिए ही जो " दादा " टाइप के छात्र होते है उन्हे नेता बनने की सलाह दी जाती है क्योंकि, उसके जल्द ही मिनिस्टर बनने के वे लक्षण होते है।

" सफल नेता " कविता में काकाजी ने एक सफल नेता कैसा होता है इसका वर्णन किया है -

" सफल राजनीतिज्ञ वह, जो जन-गण में व्याप्त,
जिस पद को वह पकड़ ले, भी न होय समाप्त।
कभी न होय समाप्त, घुमाए पहिया ऐसा,
पैसा से पद मिले, मिले फिर पद से पैसा।
कह 'काका' यह क्रम न कभी, जीवन-भर टूटे
वह नेता है सफल, और सब नेता झूठे।"[1]

नेताओं की " सूझा-बूझा " के तो क्या कहने ? ऐसी घटनाओं में भी उनकी प्रदर्शन की प्रवृत्ति आडे आ जाती है, भले ही जान क्यों न चली जाए -

" मिटींग हुई चुनाव की, माँग रहे थे वोट,
पत्थर आया मंच पर, लगी विरोधी चोट।

---

१. काका हाथरसी - " कक्के के छक्के " [पृष्ठ ६७]।

लगी विरोधी चोट, पार्टी के अधिकारी,
अस्पताल ले जाने की, कर रहे तयारी,।
नेता बोला, दुर्घटना का लाभ उठाओ,
सबसे पहले फोटोग्राफर को बुलवाओ। "[१]

काकाजी कहते है कि, नेता भाषण बहाकर जनता का भक्त बन जाता है और पाँच वर्ष में एक बार घार-घार के चक्कर काटता है। धोखा देने की कला में तो नेता माहिर होते है। जब वे जीत जाते है लोंगो को टालने के लिए बहाने बनाने भी लग जाते है।

" फोन लगाते वोटर या बाबू लालजी,
उत्तर मिलता, बाथरूम में हैं नेताजी।"[२]

ये नेता लोग कूटनीति में भी दक्ष होते है। वे अपने रिश्तेदारों को ही शासन में चिपका लेते है। इसलिए काकाजी कहते है -

" गुरु ईश्वर या देवता,
व्यर्थ हो गये आज,
कलियुग में सबसे बड़े, मिनिस्टर्र महाराज।"[३]

चुनाव जीत जाने के बाद ये नेता लोग सिर्फ अपने आप को देखने लगते है, सारी जनता इन्हें " थर्डक्लास" दिखाई देने लगती है। " फर्स्ट कण्डीशन नेता" में काकाजी ने लिखा है -

" गुरु भ्रष्टदेव ने सदाचार का गूढ़ भेद यह बतलाया।
जो मूल शब्द था सदाचोर, वह सदाचार अब कहलाया।।
गुरु मंत्र मिला, आई अक्कल, उपदेश देश को देता मैं।
है सारी " जनता" थर्डक्लास, फर्स्ट कण्डीशन नेता मैं।। "[४]

---

१. वही [पृष्ठ ७०]।
२. वही [पृष्ठ १००]।
३. काका हाथरसी - " कूटनीति मंथन करो" [पृष्ठ ४९]।
४. काका हाथरसी - " काका के कारतूस" [पृष्ठ १३१]।

ऐसी आत्मस्तुति करनेवाले यह नेता लोग राष्ट्रभाषा विधेयक के मंजूर होने के इतने सालों बाद भी हिंदी में ठीक से भाषण नहीं दे पाते और उन्हें इस तरह सोचना पडता है- एक सम्मेलन में भाषण झाडकर एक नेता महोदय वापस आ गये। उन्हें हिन्दी के व्याख्याता हितैषी जी मिल गये। नेता ने पूछा -

" "क्यों भाई हितैषी,
"समस्या" स्त्रीलिंग है या पुल्लिंग ?"
उत्तर मिला, "स्त्रिलिंग।"
" तब तो हम ठीक बोले।"
" क्या बोलें ?"
" यही कि, आजादी के बाद हमारे सामने
अनेक समस्याएँ " पैदी " हो गई हैं।" [१]

इस " समस्या की समस्या" कविता ने सत्य परिस्थिती को हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया है। ये नेता लोग चुनाव जीतने के लिए सिर्फ हिन्दी को समर्थन देते है परंतु चुनाव जीत जाने के बाद --

" क्याकहा .... समर्थन ?
हाँ - हाँ, चुनाव लड़ते समय हमने किया था
समर्थन हिंदी का
और अब करते है अंग्रेजी का।
अवसर आयेगा तो पक्ष लेंगे
तेलगू, तमिल, उर्दू और उड़िया का
शराब की बोतल और भंग की पुड़िया का। "[२]

---

१. सं.डा. गिरिराजशरण अग्रवाल -"पैरोड़ियाँ व कविताएँ"[पृष्ठ १४६]
२. सं.डा. गिरिराजशरण अग्रवाल -"पैरोड़ियाँ व कविताएँ"[पृष्ठ १६५]

इस " राष्ट्रीय अजगर " कविता में हम जिन अवसर वादियों को देखते है उन्हीं को हम समाज में भी पाते है।

* चुनाव *

पाँच वर्ष की अवधि में मध्यावधि चुनाव होते हैं और यह अवधि कम अधिक हो सकती है। इसी समय हमें उन नेताओं के दर्शन होने लगते है जो पाँच वर्ष पूर्व आश्वासनों का ढेर लगाकर गायब हो गये थे। इन दिनों वोटरों की किस्मत खुलने लगती है। आज कल वोटर और उनके वोट दोनों खरीदे जाते हैं। उन्हें पैसे का लालच दिखाकर, अन्य चीजें देकर उनसे वोट खरीदें जाते हैं। नेता सभाओं का आयोजन करते है, घर-घर जाकर हाथ जोड़ते है और चुनाव के पश्चात् उन स्थानों का दर्शन भी करना पसंद नही करते।

काकाजी ने ऐसे चुनाव के प्रचार के लिए जानेवाले लोगों को सलाह देते हुए " चुनाव - चुटकी में लिखा है -

" एलेक्शन के सुरमा! नोट करो सामान,
" फर्स्टएड " का बक्सा भी रख लेना श्रीमान।
रख लेना श्रीमान, बनाओ जितने झंडे,
झंडो से भी दुगुने, बुक कर लेना गुंडे
पोलिंग पर जाओ, तो पीकर जाना मिस्टर
तिकड़म, झूठ, फरेब, चापलूसी की मिक्चर।"[1]

---

१. काका हाथरसी - " कक्के के छक्के " [पृष्ठ २७]।

काकाजी ने नेता लोग किस तरह वोटरों को सिर्फ इलेक्शन के समय तक महत्त्वपूर्ण मानते है इस बात को बताते हुए फिल्म " अनपढ़" की एक धुन " आप की नजरोंने समझा " की पैरोडी इस प्रकार लिखते है -

" आप की नजरों ने समझा, आदमी रद्दी मुझे,
इसलिये सरकार की मिलती नहीं गद्दी मुझे।"[१]

अगर एकाध नेता चुनाव में हार जाए तो उसकी हालत क्या होती है यह काकाजी ने " चुनाव की चोट" मे बता दिया है -

" हार गए वे लग गई, एलेक्शन की चोट,
अपना - अपना भाग्य है, वोटर का क्या खोट।
वोटर का क्या खोट, जमानत जब्त हो गई,
उस दिन से ही लालाजी को खाब्त हो गई।
कहं काका कवि बरति है सोते ...... सोते,
रोज रात को लेवं, हिचकियाँ रोते - रोते।"[२]

अर्जुन और कृष्ण के बीच कुरुक्षेत्र पर जो संवाद हुआ था, जिससे "गीता" का निर्माण हुआ था, उसी तरह आधुनिक रूप में "चुनाव संग्राम"[३] इस कविता में कृष्णकुमार ने अर्जुनसिंह से चुनाव लड़ने और दुश्मन का पराजय करने की सलाह दी है, इस घटना को प्रस्तुत कर काकाजी ने अच्छा-खासा मजाक उड़ाया है।

काकाजी कहते हैं ये नेता लोग चुनाव में वादे करते है। अगर वे उन्हें पूरा करें तो क्या हो ? स्वयं काकाजी उसका उत्तर देते हुए कहते है-

" अगर चुनावी वायदे,
पूर्ण करे सरकार,
इंतजार के मजे सब, हो जाएँ बेकार।" [४]

---

१. सं.डा गिरिराजशरण अग्रवाल- "पैरोडियाँ व कविताएँ"[पृष्ठ २०७]
२. काका हाथरसी - " कक्के व छक्के " [पृष्ठ २७]।
३. सं.डा. गिरिराजशरण अग्रवाल- काका की विशिष्ट रचनाएँ"[पृ. ७५]
४. काका हाथरसी - लूटनीति मंथन करो" [पृष्ठ ८]।

डा. मिथिलेश माहेश्वरीजी कहती है, " आम चुनाव-प्रक्रिया इतनी दोष-पूर्ण हो गई है कि, जिसको लाठी उसी को भैंसवाली कहावत चरितार्थ हो रही है। मत पेटियाँ गायब कर देना और सील तोड़कर फर्जी वोट डालना आम बात हो गयी हैं।"[1]

* दलबदलू वृत्ति -

राजनीति के क्षेत्र में आज-कल दल बदलू वृत्ति बढ़ती जा रही हैं। इसी वजह से सरकार की स्थिति बदलती रहती है। इसके पीछे पैसा और पद का प्रलोभन रहता है। उनके उपर काकाजी ने "आई में आ गए" कविता में व्यंग्य किया है -

" जब देखा अपना दल में, कोई दम नहीं रहा,
मारी छलांग खाई से, "आई" में आ गए।
करते रहो आलोचना, देते रहो गाली,
मंत्री की कुर्सी मिल गई, गंगा नहा गए।"[2]

इस संदर्भ में काकाजी तो " भगवान का भी इंटरव्यू" ले चुके हैं। उसके बारे में काकाजी ने भगवान से सवाल किया --

" इतने सारे दलबदलुओं को भारत भूमि पर,
अवतरित होना था तो,
गिरगिट बनाने में समय क्यों नष्ट किया नारायण ?"[3]

काकाजी ने " भगवान को ज्ञापन" देकर दलबदलुओं को वोट प्राप्त करने की कला पर व्यंग्य किया है। उन्होंने भगवान को सजेशन दिया है -

" नेत्रों की ज्योति घटती जा रही है ,
इनमें एक्स-रे वाले, ऐसे लैंस कीजिए एडजस्ट,

---

१. डा. मिथिलेश माहेश्वरी - " काका हाथरसी :एक समीक्षा यात्रा [पृ१०२]
२. काका हाथरसी - " चार सप्तक" [पृ. ६८]
३. काका हाथरसी - " काका के व्यंग्यबाण" [पृ.१०२]

नेताओं की आत्मा दिखा सकें स्पष्ट।
जनता को धोखा नहीं दे सकेंगे,
दलबदलू वोट नहीं ले सकेंगे।"[१]

ये दलबदलू आज एक दल में, कल दूसरे, ऐसे दल बदलते रहते है। काकाजी ने "पाँचो धाम" कविता में इनके दिन में पाँच दल बदलने के बारे में व्यंग्य करते हुए कहा है --

"काका" शेखी मारें, चारों धाम कर लिए,
लेकिन नेताजी ने, पाँचो धाम कर लिए।"[२]

* कुर्सी प्रलोभन -

काकाजी ने नेताओं के कुर्सी प्रलोभन से त्रस्त होकर "भगवान से इंटरव्यू" में उनसे सवाल किया --

"कुर्सी से चिपकने वाले बड़े-बड़े महारथी
मौजूद थे तो छिपकली का निर्माण
क्यों किया दीनदयाल ?"[3]

नेताओं के इसी कुर्सी प्रलोभन पर काकाजी ने फिलम किस्मत को "कजरा मुहब्बतवाला" धुन पर बनायी पैरोड़ी इस प्रकार --

"कुर्सी मिनिस्टरवाली, हुई तू कल ही खाली।
मिल जा तू मुझको मेरी जान: हाय रे मैं तेरे कुर्बान।"[४]

नेताओं के बढ़ते कुर्सी प्रलोभन पर इससे अच्छा मजाक और क्या हो सकता है ?

---

१. सं.डा.गिरिराजशरण अग्रवाल- "पैरोड़ियाँ व कविताएँ" [पृष्ठ १३१]।
२. काका हाथरसी - "कक्का के छक्के" [पृष्ठ ४२]।
३. काका हाथरसी - "काका के व्यंग्यबाण" [पृष्ठ १०२]।
४. सं.डा.गिरिराजशरण अग्रवाल - "पैरोड़ियाँ व कविताएँ" [पृ.११६]।

* अनशन -

नेता जनता की समस्याओं को सुलझाने के लिए अनशन का बहाना लेते है लेकिन उनकी उसके पीछे मूल भावना क्या होती है, इसे काकाजी ने " अनशन " कविता में बताया है --

" अधिक भोज्य से आप का, वजन आधिक बढ़ जाय,
धन्य-धन्य नेता प्रभू. बतला दिया उपाय।
बतला दिया उपाय, साधना सात्विक साधो,
अखबारों में अनशन की घोषणा करा दो।
" डायटिंग " हो जाय, मुफ्त में नाम कमाओं,
मिलें आम के आम, दाम गुठली के पाओ।"[1]

और कुछ नेता तो इससे भी आगे निकल जाते है। " श्री भ्रष्टाचार्य " में काकाजी ने एक ऐसे नेता का जिक्र किया है जो अनशन को खेल समझाता है क्योंकि,

" अनशन में है हो क्या महाराज।
बताऊँ तुम्हें इसका राज ?
४ रसगुल्ले और एक किलो रसमलाई -
एक दिन पहले पेट में कर दो सप्लाई।
फिर क्या भूख लग सकती है, मेरे भाई।"[2]

ऐसा स्वार्थी दृष्टिकोण रखनेवाले नेता क्या जनता की माँगे पूरी करवाने के लिए अनशन कर सकते है ?

* चमचे और चापलूसी -

काकाजी कहते है राजनीति के क्षेत्र में आज कल चापलूसी का बड़ा महत्व है। काकाजी ने एक जगह चापलूसी पर व्यंग्य करते हुए कहा है

---

१. काका हाथरसी - " कक्के के छक्के " [पृष्ठ १५]।

२. काका हाथरसी - " काका के कारतूस " [पृष्ठ १२५]।

कि, आज कल मक्खन के महंगे होने का कारण यह है कि, आज खाने से ज्यादा इसे लगाया जाता है। ये चापलूसी करनेवाले चमचे राजनेताओं के कार्य में व्यवधान डाल देते है। और अगर कोई इमानी नेता हो भी तो उसे बेईमान बना देते है। और यह न हो सके तो उसे कुर्सी से लुढ़का देते है अर्थात पदच्युत करा देते है। इसी परिस्थिति की वजह से आज चापलूसी कर सकनेवाला संत्री से मंत्री बन जाता है। काकाजी कहते है कि, ये राजनीति के युध्द तो कभी भी खत्म नहीं होंगे तो इसलिए बेहतर है कि, तुम चमचे बन जाओ। चमचों के बारे में डा. मिथिलेश माहेश्वरी भी कहती है - " लोडर से लेकर मंत्री तक चमचे है। सरकार में भी चमचों का ही बोलबाला है। जब समाज में चाटुकारिता बढ़ जाती है और सत्परामर्श देनेवाला कोई नही रह जाता तब सरकार का पतन निश्चित हो जाता है।"[१]

काकाजीने अपनी कविताओं में नेताओं को आड़े हाथों लिया है। उनकी स्वार्थी प्रवृत्ति, दलबदलू वृत्ति, चुनाव में गुण्डागर्दी, कुर्सी का प्रलोभन, अनशन, चापलूसी वृत्ति और चमचों का राज आदि सभी राजनीति की समस्याओं को उठाया है और उनपर व्यंग्य कर उन्हें हमारे सम्मुख पेश किया है।

३] आर्थिक समस्या -

आर्थिक विषमता की वजह से हमारे देश में कई समस्याएँ निर्माण हो रही है। एक सजग साहित्यकार इन समस्याओं का चित्रण अपने साहित्य में किये बिना नहीं रह सकता। " बिना परिश्रम, कोठी खड़ी कर लेने की लालसा, समाजजनों के स्वास्थ्य की अवहेलना करते हुए खाद्य

---

१. डा. मिथिलेश माहेश्वरी - "काका हाथरसी : एक समीक्षा यात्रा[पृ०८]।

पदार्थों में अखाद्य पदार्थों की मिलावट, उपयोगी वस्तुओं को काले गोदामों में छिपा कर कृत्रिम महंगाई उत्पन्न कर काले धन को बटोरने की स्पृहा, निरंतर बढ़ते हुए परिवार के प्रति चिंताहीनता और दिन-दिन बढ़ती हुई बेकारी की समस्या के कारण समाज निरंतर कमजोर होता जाता है। किसी भी व्यंग्यकार की दृष्टि इन विडम्बनाओं की ओर जाना स्वाभाविक ही है।"[१] काकाजीने इन सभी की ओर एक अलग नजरिये से देखकर फिर उनपर तीखा व्यंग्य किया है।

* महंगाई -

महंगाई आज-कल दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। यह एक प्रमुख आर्थिक समस्या के रूप में हमारे सामने आ गई है। आज कल जब हम बाजारों में जाते है तो सब चीजों के भाव बढ़े हुए पाते है। काकाजी कहते है कि, मुझे पुराना जमाना याद आता है, जब हम जेबों में पैसे भरकर ले जाते थे और थैला भरकर सामान लाते थे। आज स्थिति यह है कि, थैले में पैसे भरकर ले जाते है और जेबों में सामान लाते है।

इस महँगाई से आम जरूरती चीजों को प्राप्त करना भी मुश्कील हो गया है। काकाजी ने कहा है कि,

" महंगाई ने कर दिये,
राशन-कारड फेल,
पंख लगाकर उड़ गए, चीनी-मिट्टी तेल।"[२]

आज ... में इस महँगाई की वजह से क्या-क्या हो रहा है यह बताते हुए " महँगाई क्यों" इस कविता में काकाजी ने कहा है -

---

१. काका हाथरसी - " काका के व्यंग्यबाण " [पृष्ठ १०]।

२. काका हाथरसी - "कचके के कक्के" [पृष्ठ १०४]।

"जब तक सेफो में भरे, दो नंबर के नोट,
तब तक जनता पर पड़े, महँगाई की चोट।
महँगाई की चोट, व्यर्थ है सारी कोशिश,
नित्य नई हड़तालों के, आते है नोटिस।
उत्पादन कम, व्यय ज्यादा, फिर दंगम दंगा,
ले जाएगी कहाँ; हमें यह उलटी गंगा।"[1]

काकाजी ने यहाँ तक भी कहा है कि, आप हमेशा महँगाई की बात मत कीजिए। अब तो एक रुपये में हमें गेहूँ के दस दाने मिल रहे है। दिन-रात प्रगति होने लगी है आगे वे "महँगाई" पर तीखा व्यंग्य करते हुए कहते हैं -

"चिकनाई के लिए व्यर्थ क्यों कर घबराओ,
डाक्टर से घी का इंजेक्शन लगवा लाओ।"[2]

और अगर मह महंगाई न हो तो नेताओं को वोट कैसे मिलेंगे ? अगर महंगाई न हो तो नेताओं को घास कौन डालेगा ? इसलिए "पंद्रह अगस्त हो रहा अस्त" में काकाजी ने कहा है -

"महंगाई को खाई रोटी, कर दी रिश्वती दलालों ने
उत्पादन डाऊन करा दिए, नल-बिजली की हड़तालों ने।
अपराधों की भरमारों ने, जग जीवन को कर दिया ध्वस्त।
पंद्रह अगस्त हो रहा अस्त।"[3]

इसी महंगाई की वजह से भूखे बच्चों को चुप कराना उनकी माताओं को दुःख दायी बन जाता है। "दही और दिवाली" में इसका करुण चित्रण करते हुए काकाजी ने कहा है कि, एक गरीब औरत के बच्चे दिवाली पर दही की माँग करते है। माँ उन्हे बताती है कि, एक रुपये का एक चम्मच आएगा, फिर किस-किस को खिलाऊँ ?

---

१. काका हाथरसी - "लूटनीति मंथन करो" [पृष्ठ ११३]।

२. काका हाथरसी - "कक्के के छक्के" [पृष्ठ ५०]।

३. सं. डा. गिरीराजशरण अग्रवाल - "काका के व्यंग्यबाण" [पृष्ठ २९]।

" फिर तुम सब भाई-बहन
लड़ोगे आपस में।"
"नहीं माँ, हम नहीं लड़ेंगे, सब एक-एक अंगुली
डुबोकर चाट लेंगे।"[1]

ऐसी विदारक स्थिति देखकर काकाजी जैसा हास्य व्यंग्य का कवि भी तिलमिला उठा। स्थिति तो इससे भी गंभीर है। कहीं-कहीं तो गरीब पिता जब अकेले ही रबड़ी चाट लेते है और बच्चों की बिना - द्रापदी को याद कर घर नहीं ले जाते तब उस करूणा दृश्य को देखकर उस पिता पर तरस भी आता है और क्रोध भी। " दाने-दाने पर मुहर छाप" में इस स्थि का चित्रण काकाजी ने किया है।

आज-कल मिट्टी का तेल बहुत महँगा हो गया है। लेकिन काका जी ने " राष्ट्रीय फटकार" में यह बहुत अच्छा माना है। वे कहते है --

" मिट्टी को तेल को महंगा बताते हो ?
अर्थ समझाते नहीं, व्यर्थ बड़बड़ाते हो ?
तेल अधिक देंगे तो रोज खबरें आएंगी।
कपड़ों पर छिड़ककर बहुएँ मर जाएंगी।
सास-सुर देखेंगे, जेल की कोठरी,
चुप रहो आज है, छब्बीस जनवरी।"[2]

इस महँगाई से फिल्मी क्षेत्र के लोग भी परेशान है। हिरो-हिरोईन के पर्स में कड़की है और नये सितारों से डरकर अब आऊट-डोअर शादियाँ कर रहे हैं। लेकिन नेताओं को महँगाई से कोई मतलब नहीं। जनता की आवाज उनतक पहूँचती ही नहीं। " महंगाई से त्रस्त जनता के पास राशन लेने तक की क्षमता नहीं है और नेताजी कहते है कि, अगर राशन नियंत्रण के भाव नहीं मिलता तो क्या जरूरत हैं क्यू में लगने की ? होटल में मजे से खाना खाइये, आइसक्रीम खाइयें।

---

१. सं.डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - "पैरोड़ियाँ व कविताएँ" [पृष्ठ ८८] ।
२. सं.डा. गिरीराजशरण अग्रवाल- "काकदूत व अन्य कविताएँ [पृष्ठ २२१]।

जैसे ये वस्तुएँ मुफ्त में बँट रही हों।"[1]

* आर्थिक विषमता -

हमारे देश में पूँजीवादी समाज व्यवस्था है। इसकी वजह से गरीब और गरीब होते जा रहे व और अमीर और अधिक अमीर। एक ओर गरीबों के लिए बिना श्रम किए एक वक्त की रोटी नहीं मिलती और एक ओर अमीरों के कुत्ते रोज साबुन से नहाते है, दूध-रोटी खाते है। इसीपर व्यंग्य करते हुए काकाजी ने "कुत्ता" में लिखा है --

" कुत्ता बैठा कार में, मानव माँगे भीख,
मिस्टर दुर्जन दे रहे, सज्जनमल को सीख।
सज्जनमल को सीख, दिल्लगी अच्छी-खासी,
बगुला के बंगले पर, हंसराज चपरासी।"[2]

इस आर्थिक विषमता के कारण ही अंगूठा छाप व्यक्ति भी बंगले में मौज करते हैं और एम्.ए. पढ़े विद्यार्थी गरीबी के कारण उनकी खिदमत करते है। इस आर्थिक विषमता की वजह से शिक्षा का मूल्य कम होता जा रहा है।

* जनसंख्या वृध्दि -

" भारत की आर्थिक विषमताओं का एक बहुत बड़ा कारण निरंतर वृध्दि को प्राप्त होती हुई जनसंख्या है। इसके कारण देशका आर्थिक तंत्र टूटता जा रहा है, देश पर विदेशी ऋण का भार बढ़ता जा रहा है, परिणामत: और अधिक विषमताएँ उत्पन्न हो रही है, जिन्होंने अनेकानेक असंगतियों को जन्म दिया है। काका ने इस समस्या को भी गंभीरता से देखा है।"[3] इस संदर्भ में काकाजी कहते है -

---

१. डा. मिथिलेश माहेश्वरी - "काका हाथरसी एक समीक्षा यात्रा" [पृ.८३]।
२. काका हाथरसी - " कक्के के छक्के" [पृष्ठ २०]।
३. सं.डा. गिरिराजशरण अग्रवाल- "काका हाथरसी अभिनंदन ग्रंथ [पृ. ८४]।

" यदि यही क्रम रहा बच्चों के उत्पादन का,
तो प्रश्न उपस्थित होंगे आगे बड़े - बड़े
सोने को बिलकुल जगह जमीं पर मिले नहीं
मजबूरन हम तुम सब सोयेंगे खड़े - खड़े। "[१]

* धनलालसा और कंजूसी -

आज के मनुष्य में धन को प्राप्त करने की लालसा दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। समाज में धनवानों को ही महत्त्व है फिर भी हर आदमी धन की देवी लक्ष्मी का पूजन करता है, उसकी आराधना करता है। "अर्थ-कामना" कविता में काकाजी ने इस पर व्यंग्य किया है --

" लक्ष्मी मैया ! भाग्य के खोलो शीघ्र किवाड़,
नोटों की कुछ गड्डियाँ, भेजो छप्पर फाड़।
भेजो छप्पर फाड़, मूर्ख रस गुल्ले खाते,
ज्ञानी-ध्यानी प्राणी देखो चने चबाते।
कहँ "काका" चरणामृत पीऊ भर-भर चुल्लू
पुनर्जन्म में देवी ! मुझे बनाना उल्लू।"[२]

इसी पैसों को बचाकर रखनेवाले कंजूस लोग भी होते है, जो अपने पितरों का पिंड़दान करने के लिए भी पैसा खर्च करना नही चाहते। " कंजूस कथा " में काकाजी ने ऐसे ही एक सेठ का वर्णन किया है --

" यतिप्राप्त कंजूस थे, श्री पिस्सूमल सेठ,
पंडा आए गया से, हुई सेठ से भेंट।
हुई सेठ से भेंट, वही में नाम दिखाये,
पिंडदान करने के फलादेश समझाए।
लाला बोले - "हमें नहीं माफिक आता है,
दान-धर्म से दर्द पेट में हो जाता है।"[३]

---

१. काका हाथरसी - " काका तरंग" [पृष्ठ ७०]।

२. काका हाथरसी - " काका के कारतूस" [पृष्ठ ५१]।

३. सं. डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - "काका की विशिष्ठ रचनाएँ" [पृ.८७]।

इस प्रकार काकाजी ने समाज में जो आर्थिक समस्याएँ है उनका चित्रण अपनी कविताओं में कर उनपर व्यंग्य किया है। इन कविताओं को पढ़कर हम इस समस्या के बारे में विचार करने पर मजबूर हो जाते ।

४] सामाजिक समस्या -

समाज की विसंगतियाँ, समस्याएँ, विडम्बनाएँ आमतौर पर हास्य-व्यंग्य कवियों की कलम का शिकार बनती आयी हैं। समाज की समस्याओं की तरफ एक सजग साहित्यकार हमेशा ध्यान देता है। उस पर सोचता है, और उनपर अपनी साहित्य कृति का निर्माण करता है।

डा. हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार - " व्यंग्य वह है, जहाँ कहनेवाला अधरोष्ठों में हँस रहा हो और सुननेवाला तिलमिला उठा हो और फिर कहनेवाले को जवाब देना अपने को और भी उपहासात्मक बना लेना हो जाता हो।"[१] साथ ही उन्होंने यह भी कहा है कि, समाज की कुरीतियों को सही रूप में देखनेवाला व्यंग्यकार उसे अपने व्यंग्यबाणों से बेधाता रहता है। उद्देश्य समाज का परिशोधन करना होता है। कबीर, भारतेन्दु आदि ने समाज की विसंगतियों, राजनीतिक भ्रष्टाचारों, विडम्बनाओं को गहराई में अनुभव कर उसे व्यंग्य से समाप्त करने का प्रयास किया है। डा. गिरिराज शरण अग्रवाल जी कहते है --

" इस दृष्टि से काका की व्यंग्य रचनाएँ अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। उन्होंने छिछली शिष्ठता एवं मान्यता, कृत्रिमता, प्रदर्शन वृत्ति, सामाजिक - सांस्कृतिक - साहित्यिक, आर्थिक - राजनीतिक क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार और अतिचार, रूढ़िवादिता, अथवा श्रेष्ठ परंपराओं को खंडित करने की प्रवृत्ति आदि पर डटकर व्यंग्य का प्रहार किया है। ये वे प्रवृत्तियाँ हैं जिनसे समाज का अधिकांश भाग मुक्त नहीं हो पाता हैं।"[२]

---

१. डा. हजारीप्रसाद द्विवेदी - " कबीर" [पृष्ठ १७२]।

२. सं.डा. गिरिराजशरण अग्रवाल- "काका हाथरसी अभिनंदन ग्रंथ"[पृ.८७] ।

काकाजी ने हास्य-व्यंग्य के तीरों से शायद ही कोई सामाजिक समस्या बच पायी होगी। उन्होंने भाषा समस्या, मिलावट, फैशन, दहेज समस्या, भ्रष्टाचार, हड़ताल, जनसंख्या, आवश्यक सेवा और समस्या, दोमुँहापन आदि कई समस्याओंपर हास्य-व्यंग्य किया है। इन सभी को निम्नलिखित रूप में विभाजित कर उनका विश्लेषण किया जा सकता है।

१] शिक्षा समस्या -

आधुनिक काल में शिक्षा व्यवस्था क्लर्क बनाने का एक कारखाना बनकर रह गया है। वर्तमान शिक्षा पध्दति में जो विसंगतियाँ है उनको वजह से अनुशासन हीन छात्रों के स्वभाव में असंगतियाँ आ गई है। आज शिक्षा व्यवस्था या शिक्षा पध्दति की क्या अवस्था है, इस पर व्यंग्य करते हुए काकाजी ने " शिक्षा पध्दति " में लिखा है --

" बाबू सर्विस ढूँढ़ते थाक गए करके खोज,
अपढ़ श्रमिक को मिल रहे चालिस रुपया रोज।
चालीस रुपया रोज, इलम को लूट रहे है,
ग्रेजुएट जी रेल और बस लूट रहे है।
पकड़े जाए तो शासन को देते गाली,
देख लीजिए शिक्षा पध्दति की खुशहाली।"[१]

आजक कल के अध्यापक कॉलेज में विद्यार्थियों को पढ़ाने की अपेक्षा ट्यूशनपर ध्यान देते हैं। काकाजी ने इसपर भी व्यंग्य किया है परंतु साथ में यह भी स्वीकार किया है कि, अध्यापकों को जो वेतन दिया जाता है, उसमें दस्तखत ज्यादा रकम पर करवा लिया जाता है परंतु हाथ में आते है, बहुत कम! और उपर से छात्रों को गलती करने पर सजा भी वे नहीं दे सकते क्योंकि, उसपर जल्द ऐक्शन ली जाती है। इसलिए वे सिर्फ अपनी तनखा से मतलब रखते हैं। " बेचारा अध्यापक " में काकाजी ने अध्यापक की यथार्थ स्थिति का ज्ञान हमें कराया है। --

---

१. काका हाथरसी - " कवेक के छर्के " [पृष्ठ १३२]।

" कौन जन्म के हुए, उदय हमारे पाप,
अध्यापक बन, कर रहे, प्रायश्चित चुपचाप।
प्रायश्चित चुपचाप, छात्र-जीवन जब पाया,
हुई तनिक-सी भूल, गुरु का डंडा खाया।
पिटना जारी है, अध्यापक बनते - बनते,
तब गुरु से पिटते थे, अब चेलों से पिटते।"[1]

आज के विद्यार्थी जब कॉलेज में जाने लगते है तब से उनमें बदलाव आने लगता है। वे झूठी शान दिखाने लगते है। गाँव में उसके माता-पिता कष्ट कर पैसे भेजते है और ये होस्टल में रहकर मौज-मस्ती करते है। आज-कल जो मंत्री का पुत्र है, अधिकारी का पुत्र है, वह नकल करके पास हो जाता है और साल भर मेहनत करनेवाला छात्र पीछे रह जाता है। काकाजी ने "परिक्षा-दीक्षा" में लिखा है -

" मंत्री जी का पुत्र प्रिय, रहने लगा उदास,
इम्तिहान नजदीक है, याद नहीं इतिहास।
याद नहीं इतिहास, युक्ति बतलाई काका
कॉपी पर लिखा देना, नाम पता " पापा " का
फर्स्ट डिवीजन मार्क्स, परीक्षक देगा तुमको,
हो जाए यदि फेल, शूट कर देना मुझको।"[2]

यही वजह है कि, आधुनिक विद्यार्थी विद्यार्थी कम और गुंडा ज्यादा बनता जा रहा है। ये दादा टाइप छात्र फिर भी यह कहने लगते है --

" दादा टाईप छात्र मित्र मिल
लगा रहे कॉलेज में नारा।
इम्तिहान में नकल करेंगे
जन्मसिद्ध अधिकार हमारा।

---

१. सं. डा. गिरीराजशरण अग्रवाल- "काका की विशिष्ठ रचनाएँ" [पृ. ८३]।
२. सं. डा. गिरिराजशरण अग्रवाल- "काका की विशिष्ठ रचनाएँ" [पृ. ८३]।

इसमें जो आडे आएगा,
उसे छुरा-दर्शन करवाए।
स्वतंत्रता के चित्र दिखाएं।"[१]

ऐसे विद्यार्थी की काकाजी ने जो परिभाषा की है वह अत्यंत सार्थक है -

" कहें काका कविराय, वही सच्चा विद्यार्थी
जो निकालकर दिखला दे, विद्या की अर्थी।"

ऐसे छात्र जब "छात्राध्यक्ष" पद के चुनाव के लिए खड़े होते हैं तो कभी न पूरे होनेवाले आश्वासन देते हैं। "छात्राध्यक्ष का लक्ष्य" में काकाजी ने इसपर तीखा व्यंग्य किया है - वे कहते है कि, छात्रों को प्रिन्सिपल के कमरे में जाते वक्त गिड़गिड़ाकर " मे आइ कम इन सर" पूछना पड़ता है। यह लानत की बात है। मेरे छात्राध्यक्ष बन जाने के बाद प्रिन्सीपल खुद खड़े हो जायेंगे। अध्यापक क्लासरूम में आते ही प्रत्येक विद्यार्थी के पैर छुएगा और फिर पढ़ाएगा। आज के छात्र की यह स्थिति है कि, सामान्य ज्ञान का सवाल आते ही छात्र सिटपिटा जाते है। इस स्थिति का चित्रण काकाजी ने " शिव का धनुष्य" में किया है। इस प्रकार आधुनिक काल में शिक्षा के क्षेत्र में भ्रष्टाचार फैल गया है, उसकी वजह से शिक्षा की समस्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही हैं।

२] भाषा समस्या -

एक ओर रूस ने हिंदी को आवश्यक माना है और हमारे देश की राष्ट्रभाषा होते हुए भी हिंदी को वह सम्मान नहीं मिला है। काकाजी ने अंग्रेजी का आधुनिक काल में बढ़ता महत्व "हिंदी बनाम अंग्रेजी" लिखा है -

हिंदी माता को करें, काका कवि डंडौत,
बूढ़ी "दादी संस्कृत, भाषाओं का स्त्रोत।

---

१. काका हाथरसी - " जय बोलो बेईमान की " [पृष्ठ ३७]।

भाषाओं का स्रोत कि, बारह बहुएँ जिसकी,
आँख मिला पाए उससे, हिम्मत है किसकी ?
ईर्ष्या करके ब्रिटेन ने इक दासी भेजी
सब बहुओं के सिर चढ़ बैठी अंगरेजी ।"[1]

लेकिन आज स्थिति यह है कि, सभी अंग्रेजी के भक्त हो गये है। "हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है" के नारे लगानेवाले अपने बच्चों को कान्वेंट में दाखिल करा देते है। ऐसे लोगों को काकाजी ने "उपर से "इंण्डियन" है, भीतर से "अंगरेज" कहा है।" नेता भी अपनी कुर्सी न चली जाए इस विचार से हिंदी के महत्त्व के लिए लड़ने के लिए तैयार नहीं है।

काकाजी कहते है कि, दक्षिण के लोग अब भी मानने को तैयार नहीं है कि, हिंदी राष्ट्रभाषा है इसलिए वे भी अंग्रेजी को ही महत्त्व दे रहे हैं। "सारे जहाँ से अच्छा" इस धुन पर काकाजी ने लिखी "सारे जहाँ से अच्छा है इण्डिया हमारा" यह पैरोड़ी महत्वपूर्ण है --

" हिंदी के भक्त है हम, जनता को यह जताते
लेकिन सुपुत्र अपना, कान्वेंट में पढ़ाते।
बन जाएगा कलक्टर, देगा हमें सहारा --
सारे जहाँ से अच्छा .... "[2]

इस प्रकार भाषा समस्या में अंग्रेजी के वर्चस्व पर काकाजी ने अपनी कविताओं में व्यंग्य किया है।

३] दहेज समस्या -

आधुनिक काल को लगा हुआ एक कलंक याने दहेज प्रथा है। दहेज लेना और देना नए जमाने में शान समझा जाता था लेकिन आज स्थिति यह है कि, लड़कीवालों की आर्थिक स्थिति चाहे जितनी कमजोर क्यों न हो ,

---

१. सं.डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - "काका की विशिष्ठ रचनाएँ"[पृ.४३]।
२. सं.डा. गिरिराजशरण अग्रवाल- "काकदूत व अन्य कविताएँ" [पृ. २३५]।

उनसे दहेज वसूल कर लिया जाता है। यहाँ तक कि, दहेज की वजह से पक्की होती हुई शादियाँ भी टूट जाती है। इस स्थिति पर व्यंग्य करते हुए काकाजी ने लिखा है कि, पहले तो लड़की की बिदाई में माता-पिता रोते थे, लेकिन आज दहेज के कारण अपनी दुर्दशापर रोते है। कभी-कभी इसी कारण बारात बिना दुल्हन केवापस भी आ जाती है।

काकाजी ने तो यहाँ तक कहा है कि, भिक्षा पाकर संन्यासी तुष्ट हो सकता है परंतु दहेज का भिखारी कभी भी तुष्ट नहीं हो पाता। दहेज कानून कुछ नहीं कर सकता क्योंकि उसमें तो कुछ लोग दो नम्बर का धन लगाकर भरपेट देते रहते है। इसलिए कानून कुछ नहीं कर सकता और दहेज का दानव बढ़ता जाता है। काकाजी ने " दहेज का दानव" में इसपर व्यंग्य करते हुए लिखा है कि, अगर कन्या दहेज न लाए तो -

" खबर सनसनी खोज, जलाना खेल हो गया,
इसीलिए महँगा, मिट्टी का तेल हो गया।"[१]

काकाजी कहते है कि, आजकल की आधुनिक बहुएँ बदला भी लेती है और -

" किसने लपट लगाई, रपट लिखा जाती है
सास-ससुर ननदी को, जेल दिखा जाती है।"[२]

इसी वजह से समाज में और भी कई प्रथाएँ बढ़ती जाती है। जैसे - अनमेल विवाह, बाल विवाह आदि। पैसे के लोभी लोग ऐसे विवाह करवाने से भी नहीं झिझकते। ऐसी स्थिति को देखकर काकाजी तिलमिला उठे और उन्होंने अपना निशाना उसे बनाया।

४] **भ्रष्टाचार -**

डा. गिरिराजशरण अग्रवाल कहते है - " रिश्वत हमारे देश के लिए अभिशाप बनकर उपस्थित हुई हैं। इससे अभिशप्त समाज का नाम भ्रष्टाचार

---

१. काका हाथरसी - " कक्के के छक्के" [पृष्ठ [illegible]]।
२. वही - [पृ. १३४]।

के कोढ़ से गल रहा है। सरकारी विभाग ही क्यों, हर कार्यालय, यहाँ तक कि, शिक्षा संस्थान भी इसके इंद्रजाल में अपने को नंगा करते हुए सौभाग्यशाली समझ रहे हैं। अब तो ऐसा प्रतीत होने लगा है कि, इसके सहयोग के बिना दो पग आगे बढ़ना भी असंभव हो गया है।"[1] दिनों दिन बढ़ते इस भ्रष्टाचार के प्रति काकाजी ने तीखा व्यंग्य किया है --

" गांधी बाबा के जाते ही, क्या खूब जमाना आया है।
इस खादर के कुरते में भी, अब भ्रष्टाचार समाया है।"[2]

काकाजी ने तो जब " भगवान से इन्टरव्यू" लेना चाहा तो उनसे यह सवाल भी किया -

" जब देश में हजारों - लाखों भ्रष्टाचारी मौजूद थे,
तो आपने खटमल बनाने का कष्ट
क्यों किया हुजूर ?"[3]

अपना स्वार्थ साधकर जनता को कष्ट देनेवाले ये भ्रष्टाचारी " सत्यमेव जयते" का बोर्ड लगाकर सत्य के अर्थ को भी बदल रहे है। किसी दफ्तर में कोई इमानदार होता भी है तो या तो उसे जमने नही दिया जाता फिर उसे भी भ्रष्टाचार बना दिया जाता है।

रिश्वत लिए बना तो आज कोई काम नहीं होता। इसके अगणित नाम है। काकाने "रिश्वत रानी" में इसकी प्रशंसा की है --

" रिश्वत की रानी। धन्य तू तेरे अगणित नाम,
हक - पानी, उपहार औ, बख्शिश, घूस, इनाम।"[4]

काकाजी ने रिश्वत लेनेवाला "यदि पकड़ा जाय तो उसे सलाह दी है कि, तू मत घबरा। पकड़ा जाय तो रिश्वत देकर ही छूट जा। साहब

---

१. सं.डा. गिरिराजशरण अग्रवाल-"काका हाथरसी अभिनंदन ग्रंथ"[पृ.८९]।
२. सं.डा. गिरिराजशरण अग्रवाल -" काकदूत व अन्य कविताएँ" [पृ.११९]।
३. सं.डा. गिरिराजशरण अग्रवाल-"काका के व्यंग्यबाण" [पृ.१०२]।
४. सं.डा. गिरिराजशरण अग्रवाल-" काका की विशिष्ठ रचनाएँ" [पृ.५५]।

छुट्टी मंजूर न करें तो डाक्टर को थोड़े से रुपये देने से सर्टीफिकेट बन जाता है और छुट्टी भी मिल जाती है। काकाजी कहते हैं --

" कभी घूस खाई नहीं,
किया न भ्रष्टाचार,
ऐसे भोंदू जीव को, बार-बार धिक्कार।"[1]

इस प्रकार हम देखते है कि, इस समस्या का कोई समाधान नहीं है। लाख कोशिश करने पर भी भ्रष्टाचार और रिश्वत को कम करना अब हमारे बस की बात नहीं रही है इतनी यह समस्या फैल चुकी है।

५] जनसंख्या -

आज हमारे देश में जितनी भी समस्याएँ है उन सभी के मूल में जनसंख्या की वृध्दि यह मूलभूत कारण है। तो इस पर काकाजी ने कुछ भी न लिखा हो यह तो संभव ही नहीं।

काकाजी ने इस समस्यापर व्यंग्य करते हुए लिखा है कि, नेता इसपर ध्यान नहीं देते क्योंकि उनके विचार में इसके साथ हमारे वोट बढ़ेंगे। लेकिन काकाजी ने " चेतावनी " दी है --

"मम्मी-पापा को अगर अक्ल नहीं आ पाय,
संख्या साठ करोड़ से, सौ करोड़ हो जाय,
सौ करोड़ हो जाय, मुसीबत बढ़ती जाये।
रहने को धरती पर, ठौर नहीं मिल पाये।
कहं काका, इंसान बिचारे सोएँ ऐसे,
खड़े-खड़े ही घोड़ा-घोड़ी सोते जैसे।"[2]

---

१. सं.डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - "काका के व्यंग्यबाण" [पृष्ठ २७]
२. सं.डा. गिरिराजशरण अग्रवाल -"काका की विशिष्ठ रचनाएँ" [पृ.४७]।

काकाजी ने जब यह लिखा तब साठ करोड़ जनसंख्या थी। अब तो नब्बे करोड़ है, फिर भी इस समस्या का समाधान हम खोज नहीं पाये है।

६] मिलावट -

मिलावट तो भ्रष्टाचार का ही एक रूप है। इसी की कृपा से व्यापारी लोग मुनाफा कमाने लगते है। और उन्हीं के सफल व्यापारी कहा जाता है। इसके लिए काकाजी ने एक व्यंग्यपूर्ण तर्क यह दिया है कि, वेदशास्त्र सबने यह तथ्य स्वीकार किया है कि, माया और ब्रह्म से मिलकर सृष्टि तैयार हुई है। स्पष्टाचारी शब्द बिगड़कर भ्रष्टाचारी बन गया है जो तू उसकी निंदा क्यों कर रहे हो ? इसी प्रकार का एक उदाहरण देकर काकाजी ने इसपर व्यंग्य किया है --

" मनसुखलाल मुनीम से बोले कुशल किशोर,
मेल-मिलावट के लिए व्यर्थ मच रहा शोर,
व्यर्थ मच रहा शोर जानते सब विज्ञानी,
हाइड्रोजन-ऑक्सीजन मिल बनता पानी।
कहँ "काका" कविराय, शहद में गुड़ का शीरा,
पहुँचाता है लाभ गोंद में मिला कतीरा।"[१]

७] हड़ताल -

आज हम देखते हैं कि, कोई भी क्षेत्र हड़ताल से रहित नहीं है। सभी ओर इसका प्रभाव हम पाते हैं। कारखानों में, स्कूल-कॉलेजों में, सरकारी दफ्तरों में सभी जगह हड़ताले होती है। इन हड़तालों में जो मध्यस्त होते है वह अपना उल्लू सीधा कर लेते है। ऐसे नेताओं के बारे में काकाजी कहते है --

---

१. काका हाथरसी - " काका की फुलझड़ियाँ" [पृष्ठ ४६]।

" मिल मालिक से मिल गए, नेता नमक हलाल,
मंत्र पढ़ दिया कान में, खत्म हुई हड़ताल।
पत्र-पुष्प से पाकिट भर दी, श्रमिकों के शैतान की
जय बोलो बेईमान की !" [1]

यहाँ उन मध्यस्तों को पाकिट भरने प्रवृत्ति पर व्यंग्य है। हड़ताल कर्मी लोगों से उन्हें कोई मतलब नहीं है। अनशन हड़ताल का एक रूप है लेकिन प्रलोभन में आकर वह भी अधूरा रह जाता है। कई बार रेल, बैंक आदि में अगर हड़ताल हो तो पूरा देश प्रभावित हो जाता है। तब यह समस्या और गंभीर रूप धारण कर लेती है।

८] फैशन -

आधुनिक सभ्यता में वेशभूषा, केशभूषा, खान-पान आदि को महत्त्व मिल रहा है। " भारत में फैशन की बाढ़ आ रही है जिसके कारण संस्कृति की मर्यादा ढ़ह रही है। संपूर्ण समाज फैशन के पीछे पागल-सा दिखाई दे रहा है।" [2]

" न्यू फैशन की लूट है, लूट सके तो लूट,
अन्तकाल पछतायगा, प्राण जायेंगे छूट।
प्राण जायेंगे छूट, धूल अक्ल की झाड़ो,
तंग सिलाओ सूट, पुराने फेंको फाड़ो।
कहें "काका" फैशन सरिता में बहना सीखो,
पूर्ण नहीं तो अर्धनिग्न ही रहना सीखो" [3]

काकाजी कहते है कि, आज-कल तो लड़के और लड़कियों में फर्क नहीं लगता। लड़की लड़के के समान लगती है और लड़का लड़की के समान। क्योंकि, लड़के

---

१. सं. डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - "काकदूत व अन्य कविताएँ" [पृ. १३६]।
२. सं. डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - " काका हाथरसी अभिनंदन ग्रंथ "[पृ. ९६]
३. काका हाथरसी - " काका की फुलझड़ियाँ " [पृष्ठ ६४]।

आज कल लम्बे बाल रखा रहे हैं और इस जवाब में लड़कियाँ बाल कटा रही हैं। फिल्मी प्रभाव या पाश्चात्य अनुकरण ये दो वजह है जिससे फैशन का प्रचलन होता है। काकाजी ने इस समस्यापर तीखा व्यंग्य किया है।

९] दोमुँहापन -

समाज में लोगों के दोमुँहापन से आज हम इतने प्रभावित है कि, हम किस तरह रहे यही हमारी समझ नहीं आता। इस पर व्यंग्य करते हुए काकाजी ने "उलझन" में कहा है --

" किफायत से खर्च करें तो -
दोस्त कहते है, " कंजूस है स्साला "
उदारता दिखाएँ तो उंगली उठाएँगे -
" आया दो नंबर वाला।"
सूट-बूट में रहें तो " वाह रे अंग्रेजी की दुम।"
खादी पहने तो काको कहेंगो - "गिरगिट हो तुम।"[1]

इस समस्या का तो कोई तोड़ हमारे पास नहीं है। न तो हम लोगों का मुँह बंद कर सकते हैं न उनकी इच्छानुरूप अपने को उसमें ढाल सकते है।

१०] आवश्यक सेवाएँ -

रेलसेवा, डाकविभाग और एअर लाइन्स जैसी कुछ आवश्यक सेवाएँ भी है जिनके बिना हमारा काम नहीं चलता परंतु वे कभी--कभी समस्या बन जाती है। जैसे

* रेलसेवा - रेलसेवा तो आज एक ऐसी आवश्यक जरूरत है लेकिन उसपर भी भी काकाजी ने व्यंग्य किया है -

---

१. सं.डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - "पैरोडियाँ व कविताएँ"[पृ. २२]।

" कलवाली सभी रेलगाड़ी आज आई है
स्वागत में यात्रियों ने तालियाँ बजाई हैं।
खुश हो रेल मंत्री जी, सुनकर यह खुश खबरी,
चुप रही आज है, छब्बीस जनवरी।"[1]

कभी-कभी तो अचानक हड़तालों की वजह से बारात तक वापस ले जानी पड़ती हैं। गाड़ियाँ समयपर चल रही हैं यही देखकर आज हमें अचरज में पड़ जाना पड़ता है। इसलिये यह भी आज हमारे सामने एक गंभीर समस्या बन गयी है।

* डाक विभाग - डाक विभाग की "प्रगति" पर काकाजी ने कई जगहों पर व्यंग्य किया हैं। "जय बोलो बेइमान की" रचना में वे कहते है -

" डाक-तार संचार का "प्रगति" कर रहा काम,
कछुआ की गति चल रहे लैटर - टेलीग्राम।
धीरे काम करो, तब होगी उन्नति हिंदुस्तान की,
जय बोलो बेईमान की।"[2]

काकाजी ने यही बात अपनी एक और कविता "डाक-तार संचार" में भी बतायी है -

" दिवाली पर दिया था, किन्तु पहुँचा तार होली में।"[3]

इस प्रकार डाक विभाग न हो तो हमारे सार काम ठप्प रह जायेंगे और अब वह है तो इस अवस्था में कि, हमारे सामने यह समस्या आ जाती है कि, हम डाक से चिठ्ठी भेजें या न भेजें।

* एअर लाइन्स - आज कल विमान दुर्घटनाएँ ज्यादा बढ़ रही है। इसी बात को लेकर "मेरी प्रथम हवाई यात्रा" में काकाजी ने एअरलाइन्स पर बहुत तीखा व्यंग्य किया है -

---

१. सं.डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - "काका के व्यंग्यबाण" [पृ. १३२]।
२. काका हाथरसी - "जय बोलो बेईमान की" [पृष्ठ १०३]।
३. काका हाथरसी - "काका का दरबार" [पृष्ठ ८२]।

" मेरे साथी कवि बैरागी ने पूछा -
काका यात्रियों को सीट से बाँध क्यों देते है ?
हमने कहा - इतना भी नहीं जानते।
विमान यदि दुर्घटनाग्रस्त हो जाये
तो कोई भी यात्री बचकर भागने न पाये।"[१]

११] समाज के अभिन्न अंग -

पुलीस, वकील, पत्रकार, डाक्टर ये सभी समाज के अभिन्न अंग है। परंतु ये सभी भी स्वार्थ से भरे हुए दिखाई देता है। पुलीस हफ्ता चाहती है, डाक्टर और वकील दोनों अपने पास आनेवाले लोगों से ज्यादा फीस वसूल करते हैं और पत्रकार जनता की आँख में धूल झोंकने का काम गलत समाचार देकर कर रहे है।

* पुलीस - समाज के ये रक्षक आज समाज के भक्षक बनकर समाज को नींव को दीमक को तरह खा रहे है। इनपर व्यंग्य करते हुए काकाजी ने लिखा है -

" वही सफल है आजकल,
"काका" थानेदार,
एक मिनट में दे सके, गाली एक हजार।"[२]

ऐसे लोगों के लिए काकाजी ने सलाह दी है कि, वर्दी धारण कर लो। वर्दी पहन लेते ही तुममें वह ऐंठ, अकड़, सख्ती और बेदर्दी आ जाएगी।

* वकील - न्यायालय के आँगन में जितना भ्रष्टाचार होता है उतना तो शायद ही कहीं हो। काकाजी इस वस्तुस्थिति को खोलते हुए " झूठ-सच" में कहते है "

" कोर्ट कचहरी पहुँचकर देख लीजिए आप,
सत्यदेव जी मिलेंगे, झूठों के सरताज।"[३]

---

१. काका हाथरसी - " काका के कारतूस " [पृष्ठ १५०]।
२. काका हाथरसी - " लटनीति मंथन करी " [पृष्ठ १३१]।
३. काका हाथरसी - " कक्के के छक्के" [पृष्ठ ११५]।

वकीलों की जो हमेशा से इच्छा रहती है, भगवान के सामने भी तो वे उसी को बताकर प्रार्थना करते है -

" वकील करते प्रार्थना, कलम चलें सरपट्ट,
भाई-भाई में चले, चाकू - गोली - लट्ठ।
x x x
केस लड़े वर्षों तक, कोई हरे न हारे,
हारें सो मर जाय, और जीते सो हारे।"[१]

* पत्रकार - पत्रकारों का काम जनता तक सच्ची बात पहुँचाने का है लेकिन वे भी विज्ञापन प्राप्त कर उलटे-सीधे समाचार छाप देते है। काकाजी ने " दादा पत्रकार" में इसी पर व्यंग्य करते हुए लिखा है --

" पत्रकार दादा बने, देखो उनके ठाठ,
कागज का कोटा झपट, करें एक के आठ।
करें एक के आठ, चल रही आपाधापी।
दस हजार बतलायें छपे ढाई सौ कापी।
विज्ञापन दे दो तो जय-जयकार कराएँ,
मना करो तो उलटी-सीधी न्यूज छपाएँ।"[२]

* डाक्टर - डाक्टर को तो आजकल यम का दूत माना जाता है क्योंकि वे अपनी फीस पर ज्यादा ध्यान देते है न कि, रोगी अवस्था पर। पैसे को भगवान माननेवाले ये भगवान से प्रार्थना भी वैसी ही करते हैं -

---

१. वही [पृष्ठ ६३]
२. सं. डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - " काकाकी विशिष्ठ रचनाएँ"[पृ. ८५]

" डाक्टर बोले, प्रभु करे ऐसी कुछ तजवीज,
अस्पताल में भीड़ हो, क्यू में लगे मरीज।
क्यू में लगे मरीज, वायु में होय प्रदूषण,
रोगों के कीटाणु नित्यप्रति करें आक्रमण।
औषधि खाकर रोगी, आत्मिक लाभ उठाएँ,
मर्ज रहे न मरीज, स्वर्ग को सीधे जाएँ।"[1]

इस प्रकार समाज की सेवा का ढोंग रचाकर पैसों की पूजा करनेवाले इन समाजसेवीयों पर काकाजी ने गहरा व्यंग्य किया है ।

निष्कर्ष -

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि, शायद ही कोई ऐसी समस्या हो जो काका की कलम से दूर हो। धार्मिक क्षेत्र में आधुनिक भक्त और उनकी भक्ति, धर्मनिरपेक्षता, आदि पर उन्होंने अपने हास्य-व्यंग्य के तीर चलाये और कई धार्मिक समस्याओं को हमारे सामाने प्रस्तुत किया। राजनीतिक समस्याओं में नेताओं का भ्रष्टाचार, चुनाव, दलबदलू वृत्ति, चापलूसी की प्रवृत्ति, पद लोलुपता, रिश्वत आदि सभी पर उन्होंने एक अलग दृष्टि से लिखा है जिससे हम उसपर हँसते भी है और सोच में भी पड़ जाते हैं। आर्थिक समस्या तो हमारे देश की एक महत्वपूर्ण गंभीर समस्या है। उसमें भी काकाजी ने अपनी कलम का कमाल दिखाते हुए महँगाई, गरीबी, जैसी समस्याओं पर व्यंग्य किया है। समाज में होनेवाली शिक्षा समस्या, भाषा समस्या, दहेज, फैशन, भ्रष्टाचार, आदि कई समस्याओं पर काकाजी ने हास्य-व्यंग्य कर उनकी और हमारा ध्यान आकृष्ठ किया है। इस प्रकार काकाजी ने समाज की समस्याओं पर अलग अंदाज में लिखकर, उसे एक अलग ढ़ंग से पेश कर जागृति निर्माण करने का प्रयास किया है।

---

१. वही [पृष्ठ ८४]।